सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान–अवन्तिका 143
वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना–डॉ. रत्नेश शुक्ल; रोहणी तिवारी 147
वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष–डॉ. शाद अहमद 152
हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान–पवन कुमार वर्मा 155
प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि–डॉ. नलिनी सिंह 158
उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन–रणवीर ठौलिया 161
पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान विशेष संदर्भ : भील
–डॉ. अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत 166
भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 171
70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियां एवं चुनौतियां–डॉ. ऋतेष भारद्वाज 176
शिक्षा और समाज का अन्त: सम्बंध–डॉ. निशा वालिया 181
बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन–विजया वैजयंती 184
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृष्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 188
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 190
भारत एवं हिन्द महासागर की भू राजनीति–सत्येन्द्र सिंह 194
भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–डॉ. संजय कुमार; डॉ. सरिता 198
भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन–डॉ. (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता 201
वर्तमान परिदृष्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया–डॉ. दिलावर सिंह 205
कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार–डॉ. पिंकी पुनिया 209
रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन–डॉ. गिरजा शंकर गुप्ता 214
श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन–सीमा चिनप्पा; डॉ. वेदप्रकाश मिश्र 217
देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व–शिवानी सिंह 222
नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह–काजल 225
मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना–डॉ. शेलेन्द्र कुमार 227
कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी–डॉ. प्रदीप कुमार 229
भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज–अनिल कुमार यादव 233
21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में–डॉ. रामरती; ममता 237
वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता–मिथिलेश; हेमचंद यादव 242
भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियां : एक भौगोलिक अध्ययन–गोविन्द सिंह 244
इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन–डॉ. निशा जम्वाल 250
पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता एक विमर्श : समस्या, समाधान–अनिता कंवर 252
माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फपुर जिले के विशेष संदर्भ में)
–प्रतिभा सिंह; डॉ. पी. एन. मिश्र 257
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन
–वैशाली उनियाल; प्रो0 (डॉ.) सुरेश चन्द्र पचौरी 260
राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना–अनिकेत पीयुष सिंह 266
औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)–डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 269
पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–आभा मिश्रा; डॉ. विजय कुमार वर्मा 272
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन
–ज्योत्सना रमोला; प्रो0 (डॉ.) सुरेश चन्द्र पचौरी 278
बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान–डॉ. संदीप कुमार 285
अखिलेष कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या–सपना रानी 289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न–चेतन कुमार 291
बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंत: संबंध–शुभांगी 293
मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता–सुमन देवी 302
कोविड़ 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण–डॉ. चन्द्रा चौधरी 305
हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार–बिन्दु डनसेना; डॉ. बी एन जागृत 308
गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका–सुदर्शन सिंह; डॉ. स्वीटी श्रीवास्तव 310
लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण–वकील शर्मा 314
पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व–डॉ. योगिता मकवाना 319
अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग–राजकिरण चौधरी 322
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो. अनिल धर 326
सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन–डॉ. रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 330
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ. कुमारी ज्योति 332
चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ. सर्वेश चंद्र शुक्ल 335
चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका–अभिषेक कुमार तिवारी 339
पर्यावरण दर्शन और नैतिकता–मुकेश कुमार 342
गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन–डॉ. अभय कुमार सिंह 346
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां–सुनीता जांगिड 350
बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार 353
किन्नर विमर्श–सनोज पी आर 357
मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तिनों के विशेष संदर्भ में–मनीषा मिश्रा; डॉ. अमिता शुक्ला 359
सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता–ललिता देवी 363
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन–आलोक कुमार तिवारी 366
नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता–संदीप कुमार 369
मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार–संजीव कुमार पाण्डेय 371
रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन–कृपा शंकर 374
महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ. अजित कुमार पाठक 376
स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति–कुमारी अंजना 379
भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण–फरीद आलम 381
संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद–डॉ. मुकेश कुमार 385
प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना–प्रो. रमेश के. पर्वती 389
छत्तीसगढ़ के श्रमिको मे कोविड माहमारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)
–संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ. रीना तिवारी 391
राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा–प्रो. मन्जुनाथ एन. अंविग 397
कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका–तिलकराज गौड़; डॉ. शालीनी यादव 400
भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन–मो. जाहिद शरीफ 405
भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा–घनश्याम 408
पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन–मयंक भारती 411
दक्षेस : महत्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता–संजय कुमार 414
प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार–सुशील कुमार 418
ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 422
भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष–रंजना कुमारी गुप्ता 426
समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य–काजल कुमारी सिंह 431

संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य: स्थानम्–डॉ. सुमन कुमारी; डॉ. रामजी मेहता 434
आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद–मन्नु कुमार शर्मा 437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन–अभिषेक दुबे; डॉ. (श्रीमती) स्मिता मिश्रा 441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35। को हटाने की शक्ति रखते हैं?–डॉ. रीता कुमारी 444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन–डॉ. हेमन्त सिंह कंवर 448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन–सुनील कुमार 451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा केंवटिन–श्री मिथलेष सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त–डॉ. पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला 460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)–सीमा जांगिड़ 468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन–प्रमोद कुमार वर्मा–डॉ. मृदुला भदौरिया 476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा–प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार 482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन–डॉ. सौरभ मालवीय 487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ. मंजु नावरिया 491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण–डॉ. अंबादास केत 496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन–डॉ. रमेश एस. जगताप 500
बाल श्रम-एक विश्लेषण–सतीश कुमार 503
भूमण्डीलकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न–डॉ० विनोद मीना 512
ओटीटी प्लेटफार्म्स का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण–सोनी कुमारी 520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ–सुधा कनकानवर; डॉ. श्रीनिवास मूर्ति 523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव 526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध–डॉ. संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी 531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता–डॉ. योगेन्द्र कुमार धुर्वे 535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अवदान–सरिता; प्रो. बी.एल. जैन 538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान–सोमेश गुंजन 541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्ष–डॉ. दीप्ति वाजपेयी; गुंजन 543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन-अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार–डॉ. इन्दु तिवारी 547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति–अनिरुद्ध कुमार 550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृष्य का एक अध्ययन आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में –डॉ. डुंगरसिंह मुजाल्दा 553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ. प्रशान्त शुक्ला 563
हिदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण–डॉ. प्रेरणा गौड़ 568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श–डॉ. धीरज प्रकाश जोशी 571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. सौम्या शंकर; सुनील कुमार 573
शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि का प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ. वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण 584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन–पूजा जैन 588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण–डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर 591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन–डॉ. मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा 594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन–डॉ. रिया तिवारी; श्री डोमार यादव 600

वैश्वीकरण और इलैक्ट्रानिक बैंकिग सेवाओं की उपयोगिता–डॉ. संजय खत्री 606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ. आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी 608
तुलसीदास की समन्वय भावना–डॉ. राजमोहिनी सागर 613
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गौं का महत्व–डॉ० चन्द्र कान्त पांडा 617
वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)–ऋषिकेश चौहान 626
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव–चन्दना शर्मा 629
वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृष्य; हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 632
आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० आस्था दीवान 638
जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं–डॉ० अभिषेक आनन्द 640
संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र–डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु.० संजू नागर 644
हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता–डॉ० तारु एस० पवार 647
शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ)
–डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार 650
काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन–डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' 655
भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:–डॉ० हिमा गुप्ता 657
आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरुप : एक विश्लेषण–डॉ० स्मिता सिंह 660
हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 665
स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० अनिल कुमार 668
आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य–डॉ. युवराज कुमार 672
आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार–डॉ० ऋचा सिंह 679
"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत)
–डॉ. गोकुल क्षीरसागर 684
करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना–डॉ० बिजेंद्र कुमार 687
गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार–सुनीता; डॉ० रामरती 692
गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार–डॉ० पियुष कुमार सिंह 695
जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण–भावना देवी 697
पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढ़ंग से चित्रित करता सुनीता
जैन का उपन्यास "बिंदु"–नीलम देवी 699
बाल धरोहर एवं समाज कल्याण–डॉ. शिवसिंह बघेल; डॉ. के. बालराजु 703
गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ–वीना 707
जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
–राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र 709
नई कविता में सौंदर्य-चेतना–डॉ० संतोष धोत्रे 713
भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश खरे 717
मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास–गुरदीप सिंह 720
मानवाधिकार और आदिवासी–प्रा० प्रशांत देशपांडे 724
महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका–अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ. सुनील कुमार सेन 729
रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन
–अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र 732
भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति–रमनदीप कौर 736
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व–डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 740
वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 743

जूड़ो में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव–चन्द्रशेखर बांधें; डॉ. राजीव चौधरी 749
बंगला काव्य और गांधी जी–डॉ. राम बिनोद रे 754
मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास–डॉ० रितु तिवारी 764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया–कृष्णा कुमारी 767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में "आत्मविश्वास"–श्रीकृष्ण जांगिड़; डॉ. अखिलेश जोशी 770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन–यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद 774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण–प्रा. डॉ. दिग्विजय टेंगसे 777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ. चंद्रकांत पंडा 780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन–अजय कुमार 788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता–प्रदीप कुमार तिवारी 792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य–डॉ. तृप्ता 795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ–डॉ. सुरेन्द्र मिश्र 798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह 804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन–मोनिका भाटी 808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ. श्रद्धा हिरकने 811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन–मनीश कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा 818
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व–स्मिता शर्मा; डॉ. चित्रा 826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में)–बर्नाली नाथ 829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंर्तसंबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका–डॉ. आदित्य कुमार मिश्रा 832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो. अनिल धर 836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृष्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर
–डॉ. संजय सिंह महर; डॉ. हेमंत बिष्ट 840
छत्रपति शिवाजी महाराज की दृष्टिकोन से स्त्री–डॉ. हेमलता काटे 854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व–आलोक तिर्की 857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व–हामिद अली 860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन–डॉ. जोनी इम्मानुएल तिरकी 863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय 866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन–प्रभात आनन्द 868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य–चन्द्रभान सिंह 872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना–श्रीमति मीतू बरसैंया; डॉ. श्रीमती आँचल श्रीवास्वत 878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य–डॉ. स्मिता राय; डॉ. भूपेन्द्र बहादुर सिंह 881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन–डॉ. शालिनी गुप्ता 886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संदर्भ में)–डॉ. ममता रात्रे 890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में–प्रेमलता 893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव–डॉ० अवधेश कुमार यादव 895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव–डॉ० जागीर नागर 898
समाज में निरन्तर दोयम दर्जे की अनुभूति–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 903
पंजाब नाटशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच–डॉ० सुनीता शर्मा 909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका–शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा 914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च–डॉ. प्रीतम रुज 916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य–अमित डोगरा 921

प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा–डॉ. नारायण 924
स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान–डॉ. आरती कुमारी 929
भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका–डॉ. गीता सहाय 932
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ 934
नई शिक्षा नीती और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन–डॉ. कविता सालुंके 936
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ. बबीता बी. शुक्ला 939
शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार–डॉ. नागोराव शालिग्राम डोंगरे 943
नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव–डॉ. माधव के. वाघमारे 946
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टीक्षेप–श्रीमती थोरात अनिता भास्कर 949
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020–डॉ० रंजना राजेश सोनावने 952
चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन–डॉ० साहेबराव यू. अहिरे; डॉ० जी. बी. चौधरी 955
नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव एक अनुशीलन–डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण 959
राष्ट्रीय शिक्षा निती 2020 का शिक्षको को सक्षम बनाने मे योगदान–प्रताप भाऊसाहेब आत्रे 964
चित्रा मुद्गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)–डॉ. शशी पालीवाल 967
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–अनूप कुमार सिंह 971
श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 974
परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान–डॉ० रागिनी राय 977
मैत्रोयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि–डॉ० शिवा श्रीवास्तव 981
वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि–उज्ज्वल चतुर्वेदी 985
न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य–डॉ० शैलेश शुक्ला 988
चार्वाक दर्शन–डॉ० सरोज राम 993
असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व–रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी 997
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व–डॉ. मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह 1002
भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ–डॉ० विमल कुमार लहरी 1010
आदिवासी विमर्श–डॉ० नसरीन जान 1014
राजस्थान मे बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन–डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा 1016
राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवाधिकार–डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन 1019
स्ववित्तपोशित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन–अखिलेश कुमार मौर्य 1022
निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव –अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1026
ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में–डॉ० अम्बिका उपाधयाय 1029
आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में–कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी 1033
हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श–डॉ० भगत गोकुल महादेव 1039
भारत की जनजातियों मे जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. हरिचरण मीना 1041
स्ववित्तपोशित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कृपा शंकर यादव 1044
उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन–कुसुम देवी 1050
भारत और नेपाल संबंध–डॉ. वंदना वाजपेयी 1053
महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास–विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिंत 1057

अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध–मिथिलेश कुमार मिश्र 1060
उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के माध्यमिक स्तर के अनाथ व सनाथ छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1063
पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना–मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1068
उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी 1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो. देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी 1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह 1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव 1086
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा 1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ. आकाश वर्मा 1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयो में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ. संजय डी. रायबोले 1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ. परिस्मिता बरदलै 1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ. आकाश वर्मा 1104
"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ. मनीष कुमार मिश्रा 1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका–डॉ० सुनिता कुमारी 1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी 1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्दु आलोक 1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार 1126
रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ. अलका कुमारी 1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ० श्री कमलजी 1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह 1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल 1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ. महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी 1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ० मनोज कुमार 1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्व निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी 1158
मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ० राघवेन्द्र यादव 1162
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा 1165
बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार 1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां–संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय 1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम 1177
प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ० संजीव 1181
''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल 1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ. आशा तिवारी ओझा 1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ० सीमा सहदेव 1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी 1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज 1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह 1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ. (प्रो.) जे. के. पटेल 1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो. प्रभात कुमार; कल्पना देवी 1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ. प्रशान्त कुमार; डॉ. दुर्वेश कुमार 1221
रीती काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर 1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सुशीला; कु० आरती 1230

भारतीय लोकतत्रं के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ. जगबीर सिंह 1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल 1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह 1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 1250
भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन–महेश कुमार 1256
प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीतिः निरंतरता और परिवर्तन–डॉ० जय कुमार झा 1259
मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतो की महत्ताः समीक्षा–डॉ. जया भारती; डॉ. संदीप कुमार वर्मा 1262
भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन–कविता 1266
मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि–डॉ. रूपेश कुमार चौहान 1271
निधर्नता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में–डॉ. प्रियंका एन. रूवाली; उपमा द्विवेदी 1275
''उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन''–प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा 1279
युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका–श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा 1283
भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–विकास 1287
आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति–डॉ. अनिल कुमार तेवतिया 1290
टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध–डॉक्टर मधु लोमेश 1295
प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा–प्रो. (डॉ.) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल 1298
विवेकी राय कृत उपन्यास शवेत-पत्रः एक ऐतिहासिक दस्तावेज–विभा रीन 1303
हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल 1306
सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में–डॉ0 सत्येन्द्र कुमार 1309
ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 1312
प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्व–डॉ. विनय कुमार मिश्र 1317
अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति–स्वर्णिम शिप्रा 1322
पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन–प्रवीण पाण्डेय 1326
पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान–अजीत राम चौधारी; डॉ. महेन्द्र चौधरी 1329
भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका –असीम कुमार शर्मा 1332
भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व–डॉ. नवनाथ सर्जेराव शिंदे 1336
पं. दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ. हरबंस सिंह 1339
क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगो के जनजीवन के विशेष संदर्भ में–सुनील सिंह 1341
किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –महेन्द्र कुमार; डॉ. जीतेन्द्र प्रताप 1346
पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं–डॉ. पूर्णिमा आर 1352
सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास–डॉ. अनिता सिंह 1356
ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन (बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में) –डॉ. अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय 1360
समकालीन विमर्शों के समक्ष चुनौतियाँ–संजय सिंह यादव; डॉ. विनोद कुमार 1374
स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी–गीता आर्या 1377
दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया – मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण–डॉ. रेखा ओझा 1381
इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)–डॉ. विलास अंबादास सालुंके 1386
हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श–डॉ. दायक राम 1388
भारत में मातृभाषा का महत्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ. सोनू कुमार 1392
भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन–डॉ. राकेश रंजन 1396

छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद–डॉ. काजल मोइत्रा; डॉ. रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला 1401
दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन–कुमारी संगीता कुशवाहा 1405
भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)–आशा नागर 1408
पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार–डॉ. मनोज सिंह यादव 1414
ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व–रजनी कुमारी 1417
न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ. विश्वेश 'वाग्मी' 1419
सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य–हरदीप कौर 1423
संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य–डॉ. मधुलता बारा; हेमलता पटेल 1425
शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन–डॉ. किरण कुमारी 1428
अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल–डॉ. मुक्ति मिश्रा 1432
वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव–विकास रंजन 1439
विज्ञान एवं अध्यात्म–डॉ. रमाकान्त पाण्डेय 1443
फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य–डॉ. हरिकिशोर यादव 1447
भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याये–डॉ. हितैषी सिंह 1453
भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–विक्रम बहादुर नाग; डॉ. अज़ीज़ुर्रहमान खान 1456
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता–अश्वनी कुमार; किशोर कुमार 1460
भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका–डॉ. ब्रहम प्रकाश 1465
परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य–अजय कुमार मिश्र 1468
बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण–अनामिका मौर्या 1471
गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज–डॉ. सुरजीत कौर 1474
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श–डॉ. कविता मीणा 1477
भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन–रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह 1480
ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–विपिन सहरावत 1491
ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका–ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल 1494
आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 1497
इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन–डॉ० गौतम सोनी 1499
शहीद भगतसिंह–कुसम राय 1504
जीवन कौशल शिक्षा एक: नए दृष्टीकोन–डॉ. कविता सालुंके; प्रा. ज्योती लष्करी 1506
आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम–डॉ० नीलम 1509
मानव जीवन में योग–डॉ० पूजा कुमारी 1514
भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण-एक जटिल प्रक्रिया–डॉ० अशोक कुमार मिश्र 1517
अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग–डॉ० सीमा सिंह 1519
स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ–डॉ. अपराजिता जॉय नंदी 1525
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन–डॉ० विष्णु कुमार 1527
भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी–डॉ० स्मिता कुमारी 1532
शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व–आलोक तुली 1537
सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता –अमित कुमार; आर. के. अर्चना सदा सुमन टुदी; डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा 1541
चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेशपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया–डॉ. अजय कुमार सिंह 1545
21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान–डॉ. गरिमा सक्सेना 1548

बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक श्रोतों की संभावना–जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ. काजल मोईत्रा 1551
भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन–डॉ. मनोज कुमार अग्रवाल 1554
प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)–पीयूष पाण्डेय 1558
विचित्र नाटक में छंद योजना–मनिंदर जीत कौर 1562
समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. हेमलता बोरकर वासनिक 1565
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना–प्रतिभा झा 1572
हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण–राजीव वर्मा 1575
कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता–डॉ० धनंजय कुमार दुबे 1580
श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन–प्रवीण कुमार 1586
सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त–मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी 1590
महावीरचरिते तात्कालिक – समाजसंस्कृती–अनिता कौशिक: 1594
गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्–संजय: कुमार: 1599
सिक्कीं की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व–अंजू मलिक 1602
शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा–मनीष कुमार; डॉ. बिमान पॉल 1605
स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका–प्रमोद कुमार; डॉ. पारन गौड़ा 1609
पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद–पूनम 1612
हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण–सुमन 1616
प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण–डॉ. मनोज कुमार; डॉ. विकास कुमार 1619
प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में–डॉ. आरती यादव 1622
शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के सन्दर्भ में–डॉ. रश्मि पंत 1625
सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अरविंद 1630
कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन–संतोष कुमार साह 1634
राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप–नारायण सिंह 1637
साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ–रमेश चौहान; डॉ. एस.के. पवार 1641
"राष्ट्रीयता एवं भारतीय भाषाएँ"–डॉ. तारु एस. पवार 1645
भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन–धीरज कुमार पारीक 1647
मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में–गुरप्रीत कौर 1651
यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति–डॉ. सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा 1653
कुण्ठा : बद्री सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में–सुषमा देवी 1658
प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज–पूजा 1661
तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण–चन्दन कुमार 1664
मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि–डॉ. अमिता तिवारी 1668
राजस्थान मे जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस–विनोद कुमार 1671
पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज–स्वाति चौधरी 1680
योगोपनिषदों में उद्धत प्रणव: एक विवेचन–नम्रता चौहान; डॉ. शाम गणपत तिखे 1682
मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्व: एक अध्ययन–नेहा सैनी; डॉ. शाम गनपत तीखे 1688
स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिका: महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में–अखिलेश कुमार विश्वकर्मा 1693
चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज–दीक्षा कोंवर 1697
भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध–डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह 1700
कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान–मीना देवी 1703
कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्त्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन–अरुण कुमार 1706
राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिका: एक अवलोकन–डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि 1709

राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ–सत्य प्रकाश पाण्डेय 1715
प्रवासी मजदूरों का अपने घर की और हो रहा पलायन: इससे निर्मित चुनौतीयां एवं अवसरों का अध्ययन–डॉ. लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे 1719
भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति–संजू चलना बजाज 1723
सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन–डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी 1727
छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ–डॉ. स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू 1732
बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ. संतोष प्रियदर्शी 1736
भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका–डॉ० विजय कुमार 1741
भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन–चिरन्जी लाल रैगर 1745
भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी–होशियार सिंह 1750
इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता–कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ० बिमान पॉल 1753
1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अमित कुमार; राजेश कुमार 1757
'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ–चुन्नीलाल 1761
चंद्रकांता उपन्यास ''कथा सतीसर'' में कश्मीर समस्या के विविध आयाम–सुखबीर कौर 1764
बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक–दीपक कुमार झा 1766
मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन–अलका सिंह 1772
किसान अस्मिता का संकट और 'फाँस'–डॉ० बिजेन्द्र कुमार 1777
ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना–डॉ० बिजय रवानी 1781
आर्थिक विकास और पर्यावरण–श्रीमती कविता 1785
नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन–डॉ० रवींद्र कांबले 1789
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन–श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ० संजीवनी राजेश महाले 1792
नई शिक्षा नीती 2020 के साथ पढेगा भारत–डॉ० दयाराम दुधाराम पवार 1798
वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ–मांडवी दीक्षित 1801
प्राचीन मूर्तिशिल्प में पार्वती: विश्लेषणात्मक अध्ययन–राजेश कुमार जाट 1805
गरासिया जनजाति की धार्मिक अलौकिक शक्तियाँ: एक विवेचन–गोगराज चौधरी 1810
लोक-नीति और राष्ट्र निर्माण: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन–मोहम्मद राशिद खान 1814
वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण- बाधाएँ एवं सुझाव–डॉ. उमाशंकर त्रिपाठी 1819
छत्तीसगढ़ के श्रमिको में पलायन के कारण एवं समस्या का सामाजिक अध्य्यन (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में) –संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 1822
मानवता के सरोकार और अज्ञेय का काव्य–माधुरी शर्मा 1827
भारतीय योग परम्परा एवं नाथपंथ : एक तुलनात्मक अध्ययन–कुँवर रणंजय सिंह 1833
छत्तीसगढ़ के लोक गीत और नारी सशक्तिकरण–डॉ० तृषा शर्मा; डॉ० सुधीर शर्मा 1836
कुलिश की दृष्टि में राजनीति और पत्रकारिता–डॉ० जितेन्द्र द्विवेदी 1839
हिंदी साहित्य में काल क्रमानुसार अभिजात्य एवं लोक का संबंध–सचीन्द्र नाथ 1842

छत्तीसगढ़ के श्रमिको में पलायन के कारण एवं समस्या का सामाजिक अध्ययन (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)

संजय कुमार जांगडे

शोधार्थी, समाज कार्य, डॉ. सी. वी. रमन् विश्वविद्यालय करगीरोड़ कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

श्रीमति डॉ० रीना तिवारी

शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका, डॉ. सी. वी. रमन् विश्वविद्यालय करगीरोड़ कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

आधुनिकता के इस दौर में आर्थिक विकास समाज की एक अनिवार्य मांग है आर्थिक विकास के बिना आज कोई राष्ट्र न तो अपने देशवासियों को जीवन के प्रचुर साधन प्रदान कर सकता है और ना ही अंतराष्ट्रीय मंच पर अपनी भूमिका का सही निर्वाह कर सकता है।

छत्तीसगढ़ के मध्य मे स्थित रायपुर संभाग जहाँ धान की खेती अधिक मात्रा में होती है एवं यहाँ प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न होने के बावजूद इस क्षेत्र के निवासी खेती में जितनी उपज होनी चाहिये उतनी पैदावार नही कर पा रहें है इस कारण यहाँ के किसान सम्पन्न नहीं है जिसके कारण वे अपने परिवार के भरण पोषण के लिए अन्य क्षेत्रों में पलायन करते है। सरकारी नीतियों कार्यक्रमों एवं प्रयत्नों के उपरांत भी वर्तमान में ग्रामीणों को रोजगार की कमी हो रही है यहाँ के मजदूर एवं भूमिहीन कृषक कृषिकार्य गांव में ही रहकर कृषि मजदूरी करते है, उसके पश्चात् उनके पास कोई कार्य नही होने के कारण बड़े शहरों की ओर काम की तलाश में पलायन करते है और कुछ लोगशहरी चकाचौंध से आकर्षित होकर भी जाते है।

ठस शोध प्रबंधन में ग्रामीण जीवन की सामाजिक व्यवस्था को काफी बल दिया गया है। इससे छोटे कृषकों एवं खेतिहर मजदूरों की सामाजिक, आर्थिक, स्थिति में सुधारात्मक परिवर्तन तो आया है किन्तु ग्रामीण समाज के एक छोटे से हिस्से में अभी भी छोटे कृषक तथा खेतीहर मजदूर एक निश्चित मासिक आय की तलाश में नगरीय औद्योगिक केन्द्रों में पलायन करने को विवश है इससे नियोजन एवं विकास की नीति पर दुष्प्रभाव पड़ता है जो कि चिन्ता का विषय है प्रस्तुत शोध इस पर विचार करने को प्रेरित करती है। साथ ही यह शोध एक ओर ग्रामीण जीवन और उसकी संरचना के परम्परागत स्वरूप का परिचय प्रदान करती है। पलायन के पश्चात मजदूरों के जीवन में पड़ने वाले प्रभाव एवं पलायन से लाभ या समस्याग्रस्त जीवन के बारे में जन मानस में व्याप्त यह धारणा एवं सत्यता जानने की लालशा ने ही शोधकार्य की ओर प्रेरित किया है।

प्रस्तावना

भारत का 26 वां नवनिर्मित राज्य छत्तीसगढ़ जो धान के कुल उत्पादन में देश में 6वां स्थान बनाए रखते हुए 'धान का कटोरा' नाम से जाना जाता है। जिसे प्रकृति ने प्राकृतिक संपदा भरपूर दी है। हीरा से षीषा तक इस राज्य में विद्यमान है, किन्तु यहां के श्रमिकों के विषय में कहा जाता है कि यदि धान की फसल असफल हुई तो यहां के लोगो का जीवन असफल हो जाता है। इसके मूल में यहां के कृषि का अनुत्पादक एवं एक फसलीय ढांचे का होना है साथ ही यहां की कृषि की प्रकृति पर निर्भरता कृषि की असफलता के लिये मूल रूप से उत्तरदायी है। परिणामस्वरूप श्रमिक अपनी आजीविका के लिये पड़ोसी राज्यों की ओर प्रवासित हो जाते है।यह बात किसी की नजरों से ओझल नहीं कि गांवों से लोगों का पलायन हो रहा है। आंकड़ों के अनुसार, 1971 की जनगणना के अनुसार भारत में 79.78 फीसद जनसंख्या ग्रामीण थी, जो समय के साथ-साथ घटती जा रही है। इसी तरह दस वर्ष के अन्तराल के पैमाने में ग्रामीण जनसंख्या 1981 में 76.27, 1991 में 74.28, 2001 में 72.22 तथा 2011 में 68.70 फीसद में सिमट कर रह गयी। इस तरह घटती जनसंख्या को देखकर कहा जा सकता है कि एक समय ऐसा भी आएगा, जब गांव समाप्त हो चुके होंगे। मानव विकास का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य आदिकाल से प्रवास करता आया है। प्रवास को समस्या इसलिए भी कहा गया है कि इसके कारण जनसंख्यात्मक भार में असंतुलन पैदा हो रहा है। एक तरफ क्षेत्र की जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है तो दूसरी ओर जनसंख्या में घटाव आ रहा है। अध्ययनानुसार सामने आए आंकड़ों से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में केवल जनसंख्यात्मक भार में ही कमी नहीं आई है, बल्कि कई गांव लुप्त होने के कगार पर पहुंच चुके हैं।

प्रदेश में गांव से नगरों की ओर पलायन की प्रवृत्ति ज्यादा हैं, गांवों में कृषि भूमि केलगातार कम होते जाने आबादी बढ़ने के चलते रोजी-रोटी की तलाश में ग्रामीणों कोशहरों-कस्बों की ओर मुंह करना पड़ा। गांवों में बुनियादी सुविधाओं की कमी भी पलायन काकारण है साथ ही गांवों में भेदभावपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के चलते शोषण और उत्पीड़न सेतंग आकर भी बहुत से लोग शहरों का रूख करते है। शहरों में इन्हें अधिक मजदूरी के साथवर्ष भर लगातार काम मिलता है इससे इनके परिवारका भरण पोषण अच्छे से होता है एवंइनकी आर्थिक स्थिति में भी सुधार आता है। पलायन के पश्चात् ग्रामीण मजदूरों की आर्थिकस्थिति में सुधार तो आता है परंतु इनके पारिवारिक जीवन पर अलग तरह का प्रभाव पड़ता हैजो इनके स्तर को उठने नही देता है। शहरों में आकर यें भवन निर्माण, ईंट भठ्ठों, कलकारखानों आदि जगहों में कार्य करते है। इन्हें रहने हेतु पर्याप्त जगह नही मिल पाता है,झोपड़ी बनाकर वे परिवार के साथ रहते है जहाँ काफी गंदगी होती है। जिसके कारण वेबीमारी के प्रकोप में आ जाते है। मजदूरों को मजबूरीवश ऐसी जगहों पर रहना पड़ता है,क्योकि उनके पास और कोई चारा नही होता। पलायन पश्चात् में अपने मूल ग्राम को छोड़करअन्य जगह काम की तलाश में जाते तो है लेकिन ये अपने ग्रामो में सतत् संपर्क बनाये रखते है जिससे विशेष परिस्थिति में गाँव जा सकें।

शोध विधियां

- शोध प्रारूप - अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप।
- निदर्शन विधि- संभावित निदर्शन के अंतर्गत उद्देश्यपूर्ण निदर्शन का चयन किया।
- नमूने का आकार- 20

आंकडों के संग्रहण की विधि - साक्षात्कार

1. क्या आप अधिक मजदूरी के लिए दूसरे स्थान पलायन करते हैं?

क्रमांक	*विकल्प*	*बारम्बारता*	*प्रतिशत*
1	हां	15	75
2	नही	5	25
	योग	20	100

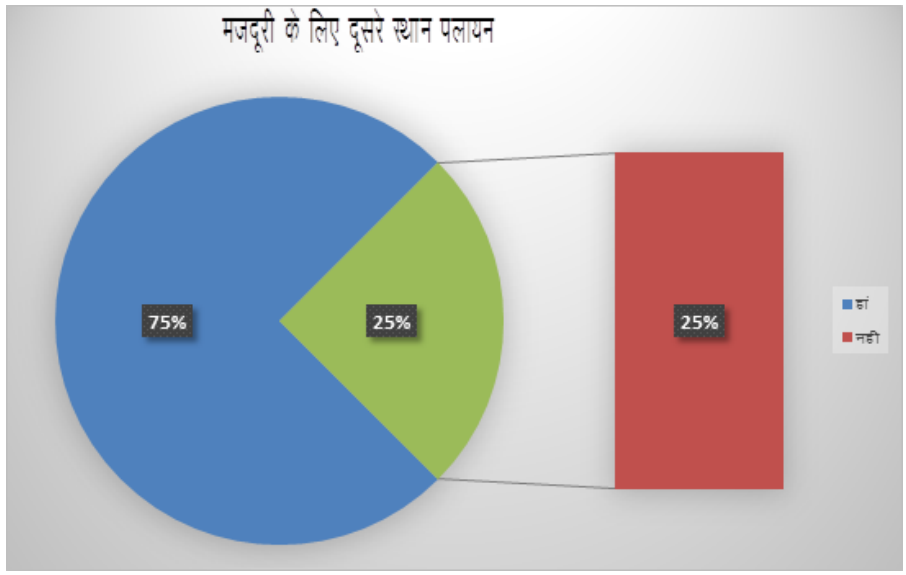

विश्लेषण एंव व्याख्या- उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि ज्यादातर श्रमिक अधिक मजदूरी प्राप्त करने के लिए दूसरे स्थान पलायन करते हैं जाता है।

2. क्या आपको पलायन करने के लिए बिचौलियों द्वारा प्रलोभन दिया जाता है?

क्रमांक	*विकल्प*	*बारम्बारता*	*प्रतिशत*
1	हां	05	25
2	नही	15	75
	योग	20	100

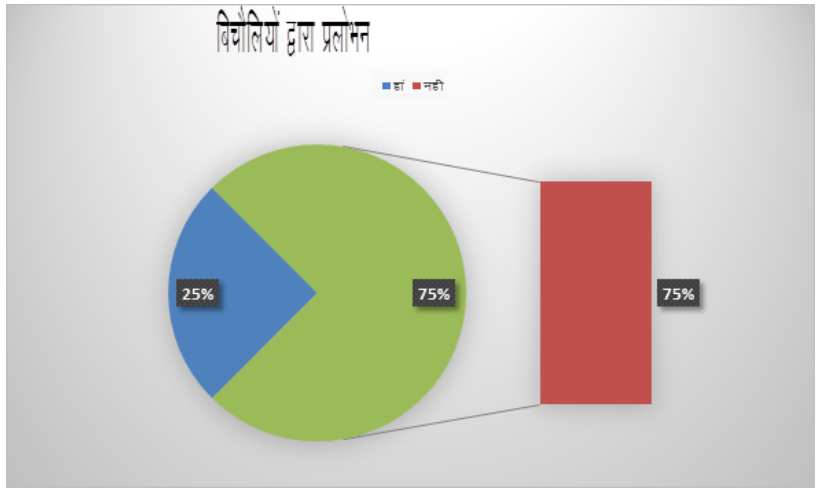

विश्लेषण एंव व्याख्या- उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि ज्यादातर श्रमिको को पलायन करने के लिए बिचौलियों द्वारा प्रलोभन नही दिया जाता है तथा कुछ श्रमिको को प्रलोभन दिया जाता है ।

3. आप पलायन कितने दिनों के लिए करते है?

क्रमांक	*विकल्प*	*बारम्बारता*	*प्रतिशत*
1	3 माह	15	75
2	6 माह	03	15
3	12 माह	02	10
	योग	20	100

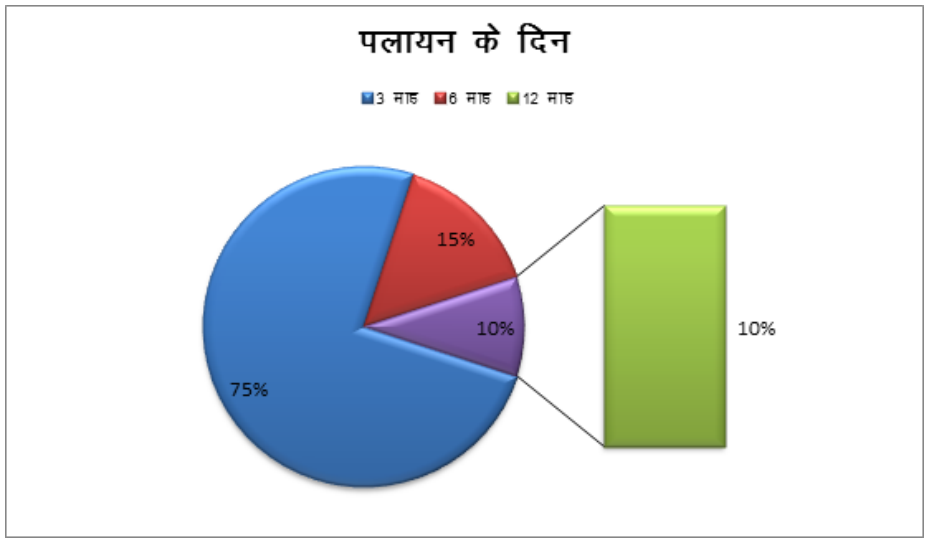

विश्लेषण एंव व्याख्या- उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि ज्यादातर श्रमिक कम समय 3 माह के लिए पलायन करते बाकि ज्यादा दिनों के लिए पलायन करते है।

4. क्या आपको कृषि के समय गांव में मजदूरी का काम मिलता है?

क्रमांक	*विकल्प*	*बारम्बारता*	*प्रतिशत*
1	हां	18	90
2	नही	02	10
	योग	20	100

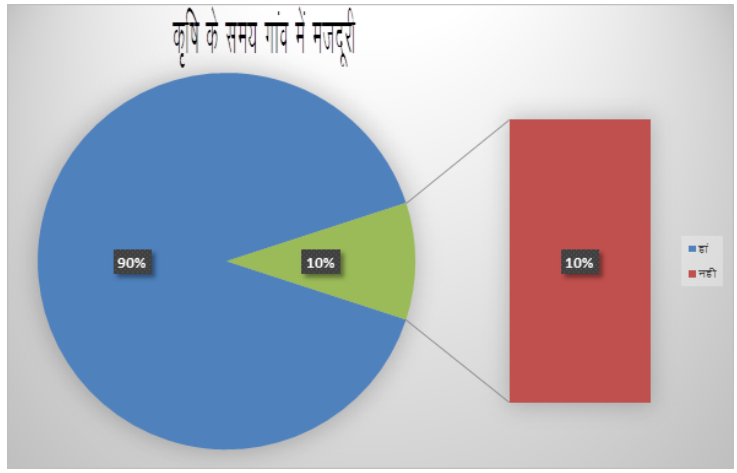

विश्लेषण एंव व्याख्या- उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि ज्यादातर श्रमिको को कृषि के समय गांव में मजदूरी का काम मिल जाता है पर यह केवल 4 माह के लिए होता है बाकि दिनों के लिए पलायन करते है।

5. क्या वहां मजदूरी का भुगतान सही समय में होता है?

क्रमांक	*विकल्प*	*बारम्बारता*	*प्रतिशत*
1	हां	18	83
2	नही	02	17
	योग	20	100

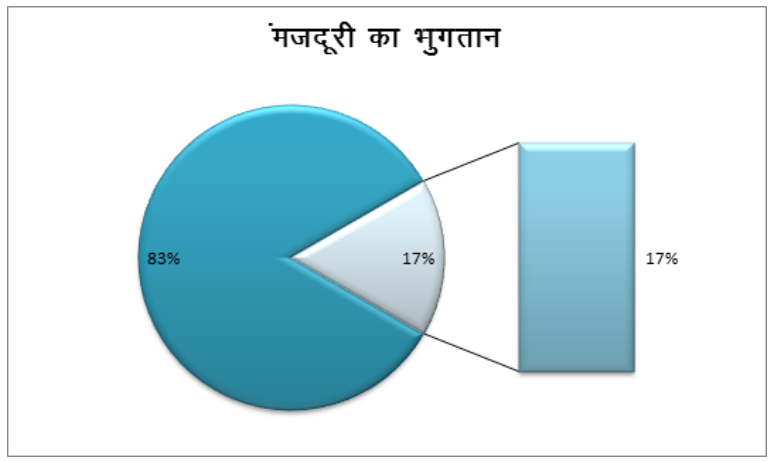

विश्लेषण एंव व्याख्या- उपरोक्त सारणी यह दर्शाता है कि ज्यादातर श्रमिको को वहां मजदूरी का भुगतान सही समय में होता है।

सुझाव

- गांवों से मजदूर पलायन रोकने के उपाय निम्न है।
- रोजगार के अवसरों में निरंतरता कायम करना
- मूलभूत सुविधाओं में विस्तार
- समानता एवं न्याय आधारित समाज की स्थापना
- ग्राम पंचायत का योगदान
- मौलिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाना
- भ्रष्टाचार-मुक्त प्रशासन की स्थापना
- लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार
- मौलिक सुविधाएँ उपलब्ध करवाना

निष्कर्ष

मनुष्य के जीवन की आधारभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा और मकान, इन सब आवश्यकता की पूर्ति का श्रोत है व्यवसाय या रोजगार । इन आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति तथा जीवन स्तर में सुधार के लिए मनुष्य स्वयं के संसाधनों को क्रियाशील एवं गतिशील करके आय प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। लोगों को अपने गांव या शहर के आसपास जब कोई रोजगार के अवसर प्राप्त नही होते अथवा उसे इतनी आय प्राप्त नही होती जिससे उनके परिवार का भरण पोषण हो सके एव ं अपने जीवन स्तर को ऊँचा उठा सके तब ये अपने गांवा कों छोड घ्कर अन्य शहरों में चले जाते है जहाँ उसे उसके परिवार के भरण पोषण योग्य अथवा तुलनात्मक रूप से अधिक आय की प्राप्ति होती है। व्यक्ति चाहे शिक्षित हो अथवा अशिक्षित, कुशल हो या अकुशल रोजगार की प्राप्ति के लिए अपने मूल निवास (गांवों) को छोड घ्कर अन्यत्र प्रस्थान करना ही पलायन कहलाता है।

प्रवास की स्थिति हमारे समाज में निरंतर चली आ रही है। व्यक्ति अपनी आजीविका, शिक्षा, रहन-सहन और पारिवारिक स्तर को ऊंचा उठाने के लिए प्रवास कर रहे हैं। भारतीय समाज की मुख्य विशेषता 'संयुक्त परिवार' है। जो कि परिवार, परम्परा और समाज में संतुलन बनाये रखती है। यहीं आंकड़ों को देखें तो प्रवास के कारण संयुक्त परिवारों में विघटन होता नजर आता है। आधुनिक समय में प्रवास तथा पलायन के कारण पुराने सामाजिक तत्वों का कोई मूल्य नहीं रह गया। आधुनिकीकरण, नगरीकरण और औद्योगीकरण ने सामाजिक मूल्यों को बदल दिया है। संयुक्त परिवार एकल परिवार में परिवर्तित होते जा रहे हैं। साथ ही प्रवास के चलते सामाजिक विघटन, पारिवारिक विघटन और धार्मिक विघटन जैसी समस्याओं का जन्म हो रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ रही प्रवास की समस्या के कारण उत्पन्न हुयी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति अध्ययन के आंकड़ों के अनुसार अत्यधिक नकारात्मकता को प्रदर्शित करती है। अवलोकन के तथ्यों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में प्रवास से पूर्व आय का मुख्य साधन कृषि था, परन्तु प्रवास की बढ़ती समस्या ने कृषि उत्पादन में कमी उत्पन्न की दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि प्रवास के बाद गांवों में जनसंख्या की कमी हुयी है, जिस कारण गांव में कृषि करने वाले लोगों की कमी हो रहे हैं और कृषि प्रधान देश से कृषि की समाप्ति हो रही है। दूसरी तरफ जो नौकरी कर रहे हैं, वह भी नगरों में प्रवासी बनकर अपनी रोजी-रोटी का बंदोबस्त कर रहे हैं और उसी रोजी से अपने परिवार का पालन-पोषण भी कर रहे हैं। इस प्रकार की आर्थिक स्थिति को अच्छी आर्थिक स्थिति का दर्जा नहीं दिया जा सकता। गांव से पलायन को रोकने हेतु सरकार योजनाबद्ध तरीके से कई प्रकार के कदम उठारही है जिससे मजदूरों के पलायन को रोका जा सके एवं मजदूरों को अपने क्षेत्रों में काम मिलसके जैसे मनरेगा एवं अन्य कार्य योजना परंतु यह इनके लिए पर्याप्त नही होता है सरकार कीयोजनाओं का क्रियान्वयन सही ढंग से नही हो पाता है सरकार को इस ओर ध्यान देने कीअत्यंत आवश्यकता है जिससे कुछ हद तक पलायन को रोका जा सके।

संदर्भ सूची

शोध परियोजना को पूर्ण करने मे जिन महत्वपूर्ण ग्रंथो, पत्रिकाओ एवं समाचार पत्रो का उपयोग किया गया है, उनकी जानकारी है:-

- सिन्हा, वी. एन. 2017 ''ग्रामीण समाजशास्त्र'' विवेक प्रकाशन
- सिंह, जे. पी. 2017 ''आधुनिक भारत मे सामाजिक परिवर्तन''
- गजपाल, एल. एस. 2011 ''कृषि श्रमिको के पलायन के कारण'' छतीसगढ राज्य के विषेश संदर्भ में, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
- गजपाल, एल. एस. 2012 ''छतीसगढ राज्य मे श्रम पलायन के अध्ययन की आवश्यकता'' पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
- गजपाल, एल. एस. 2015 ''श्रम पलायन को रोकने मे सरकारी प्रयासो की भूमिका'' पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय
- सिंह, सुप्रिया 2016 Money Migration and family, 2016
- समाचार पत्रिका नईदुनिया एवं दैनिक भास्कर की रिपोट्स
- इंटरनेट से प्राप्त जानकारिया